बालविज्ञान प्रस्तुत

दादा भगवान

भाग-१

प्रस्तावना

'दादा भगवान' वर्तमान युग के अद्वितीय आत्मज्ञानी पुरूष थे। उन्हें बचपन से ही आत्मा को पहचानने की, परम तत्व को प्राप्त करने की लगन थी। दैनिक जीवन में होने वाली हर एक घटना का वे वैज्ञानिक ढंग से पृथक्करण करते थे और उसके पीछे रही भ्रान्त लौकिक मान्यताओं से दूर रह कर सच्ची समझ अपनाते थे।

इस प्रकार उन्होंने अपना जीवन एकदम निराले ढंग से गढ़ा। बचपन से ही उनके जीवन की कितनी ही प्रेरणादायी घटनाएँ उनके 'संशोधक' हृदय को प्रतिबिम्बित करती हैं।

हर किसी के लिए उनके जीवन की बातें बहुत सुंदर दिशानिर्देश करेंगी और जीवन का ध्येय समझने की प्रेरणा देंगी। उनके जीवन की प्रेरणादायक घटनाओं का हृदयस्पर्शी परिचय यह पुस्तिका हमें कराती है।

'दादा भगवान' के जीवन की घटनाएँ उनके ही श्रीमुख से निकली वाणी में से उसी रूप में चित्रांकित करने का प्रयत्न किया गया है। आपको इस पुस्तिका में चित्र या लेखांकन में कोई भी त्रुटि लगे तो वह संकलन कर्ता की है। ऐसी कोई भी क्षति रह गई हो तो उसके लिए हम आपके क्षमा प्रार्थी हैं।

– जय सच्चिदानंद

प्रकाशक

श्री अजीत सी. पटेल
५, ममतापार्क सोसायटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे,
उस्मानपुरा, अहमदावाद-३८००१४, गुजरात, भारत.
फोन: (०७९) २७५४३९७९, २७५४०४०८

प्राप्ति स्थान

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाइवे, अडालज
जिला : गांधीनगर - ३८२४२१. गुजरात,भारत
फोन : (०७९) ३९८३००३४
email : balvignan@dadabhagwan.org
website : www.dadabhagwan.org
kids.dadabhagwan.org

मुद्रक

महाविदेह फाउन्डेशन (प्रिन्टिंग डिविज़न)
पार्श्वनाथ चेम्बर्स ,नई रिज़र्व बैंक के पास,
इन्कमटेक्स, अहमदाबाद-३८००१४, गुजरात, भारत
फोन : (०७९) २७५४२९६४, ३०००४८२३

प्रथम आवृत्ति : ५,००० कोपी नवम्बर २००८
मूल्य : भारत रु. ३५, US $ 2.5 GB £ 1.5

©: All Rights Reserved - Mahavideh Foundation
Address as above

दादा भगवान

भाग-१

'दादा भगवान'
के नाम से विख्यात
श्री अंबालाल पटेल का
जन्म तारीख ७ नवम्बर १९०८ के
दिन उनके ननिहाल में, बड़ौदा
के पास के तरसाली गाँव
में हुआ था।

उनके पिता मूलजी भाई पटेल तथा माता झवेर बा गुजरात के चरोतर प्रदेश के भादरण गाँव के निवासी थे। उनका पारिवारिक, सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में बहुत नाम था।

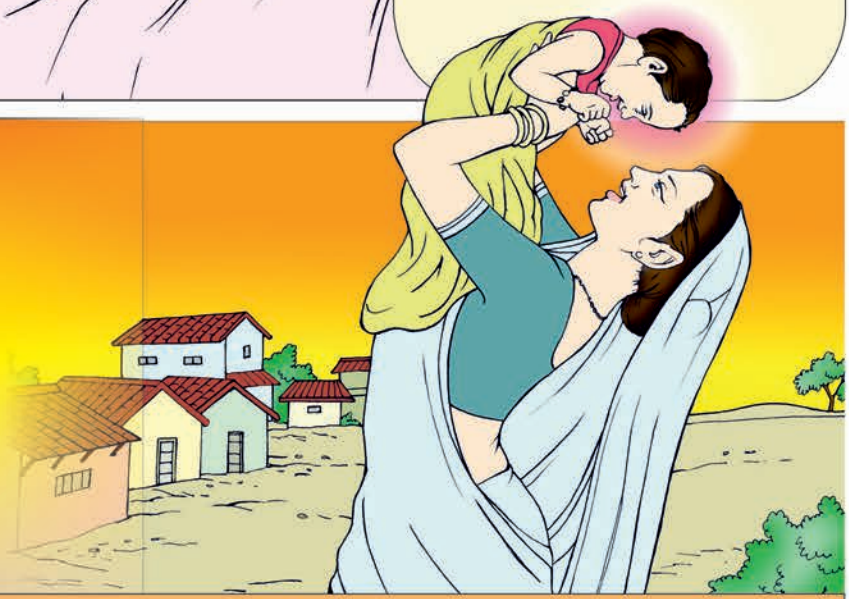

भादरण छोटा-सा गाँव था। तब मुश्किल से सात हजार की बस्ती होगी। पूरे गाँव में उनकी माता झवेर बा जैसा कोई नहीं था। उनकी माता झवेर बा के संस्कार कुछ न्यारे ही थे। वे अत्यंत दयालु और परोपकारी वृत्ति की थीं और बहुत ही उच्च विचारों वाली थीं।

झवेर बा ने पुत्र के जन्म से पहले लगभग आठ वर्ष तक घी न खाने की, अम्बामाता की मन्नत मानी थी। इसीलिए उसके बाद जन्मे पुत्र का नाम 'अंबा का लाल' यानी 'अंबालाल' रखा।

बचपन से ही अंबालाल बहुत सुंदर और मनमोहक थे। वे बहुत चतुर और बहादुर थे, साथ ही बहुत नटखट भी थे। उनके फूल जैसे प्रफुल्लित चेहेरे को देख कर उनके पड़ौस में रहने वाले पूनी बा ने प्यार से उनका नाम 'गलगोटिया' रख दिया। लोग उन्हें प्यार से 'गला' कह कर बुलाते थे।

बचपन में माता का प्रेम और सामीप्य उन्हें अधिक मिला था। यदि झवेर बा को कहीं बाहर जाना होता तो नन्हे अम्बालाल को सोते समय पकड़ने के लिए अपनी नरम साड़ी दे कर जाते। बालक को, माता पास में ही है, ऐसा आश्वासन लगे न!

माता की छत्रछाया में बच्चे जीवन के उच्च पाठ सीखते हैं। झवेर बा ने सुंदर संस्कारों का सिंचन करके बालक अंबालाल का उच्च चारित्र गढ़ा। देखभाल अच्छी हो तो पौधा भी अच्छा ही उगेगा न!

एक शाम अंबालाल मित्रों के साथ खेलकर घर लौटे।

माता की तरफ से मिले ऐसे संस्कार बालक को महावीर बनायें या नहीं?

एक रात बालक अंबालाल को खटमल काट रहे थे, इसलिए नींद नहीं आ रही थी, तो वे उठकर बैठ गए।

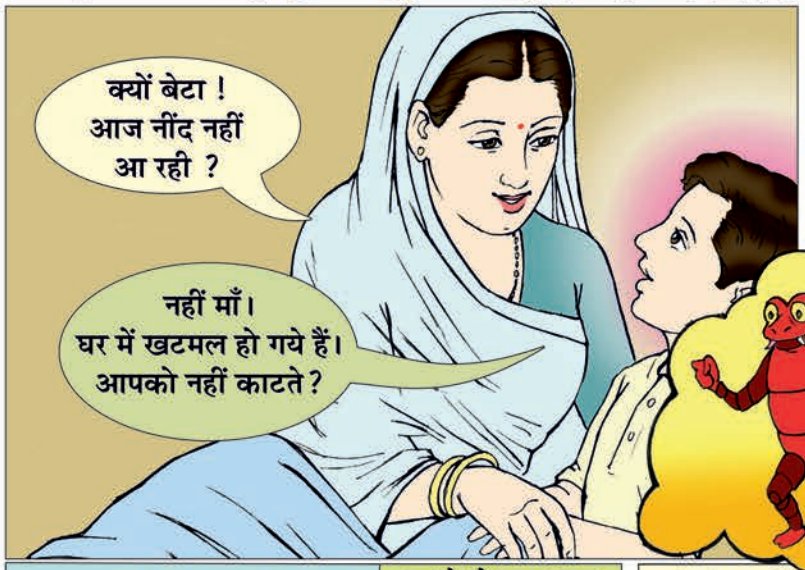

'' मेरे कारण इस संसार में किसी भी जीव को किंचितमात्र भी दुःख न हो '' ऐसा भाव अंबालाल के हृदय में बचपन से ही जगा।

एक बार झवेर बा को किसी काम से बाहर जाना पड़ा। तब उनके मोहल्ले में एक पड़ौसी ने अंबालाल के लिए खाना बना दिया।

रसोई में पहुँच तो गए, पर अभी तक उन्होंने कभी खाना थोड़े ही बनाया था ? डिब्बे निकाले, बर्तन निकाले, जोश ही जोश में शुरू तो किया, पर बनाना नहीं आया ! रसोई में सब बिखर गया और बर्तनों का भी फैलाव हो गया !

दूसरे दिन झवेर बा वापिस आये तब रसोई में सब-कुछ उथलपुथल देखा। उन्होंने गुस्सा होने के बदले बड़े प्यार से अंबालाल को पास बुला कर सिर पर हाथ फेरा।

झवेर बा में एक माता के कितने उत्तम गुण थे ! उन्होंने कभी भी अंबालाल को डाँटा नहीं था, न ही उन पर कभी गुस्सा किया था। हमेशा पोज़िटिव दृष्टि रखकर उनके मन का समाधान हो, उस प्रकार प्रेम से अंबालाल को समझाते और सिखाते थे।

बचपन से ही अंबालाल मिलनसार स्वभाव के और ओब्लाइजिंग नेचर* के थे। माता के ओब्लाइजिंग नेचर और खानदानी गुण बचपन से ही अंबालाल के व्यवहार में दिखाई देते थे। किसी के लिए भी चीज़ें लाने-ले जाने का काम वे खुशी से करते थे।

चार फर्लांग दूर बाज़ार है। इतना दूर चलकर जाऊँ और सिर्फ इतना ही लाना हो तो पड़ौसियों के लिए भी सब्जियाँ ले आऊँ तो उन्हें जाना न पड़े । उनका भी काम हो जाए।

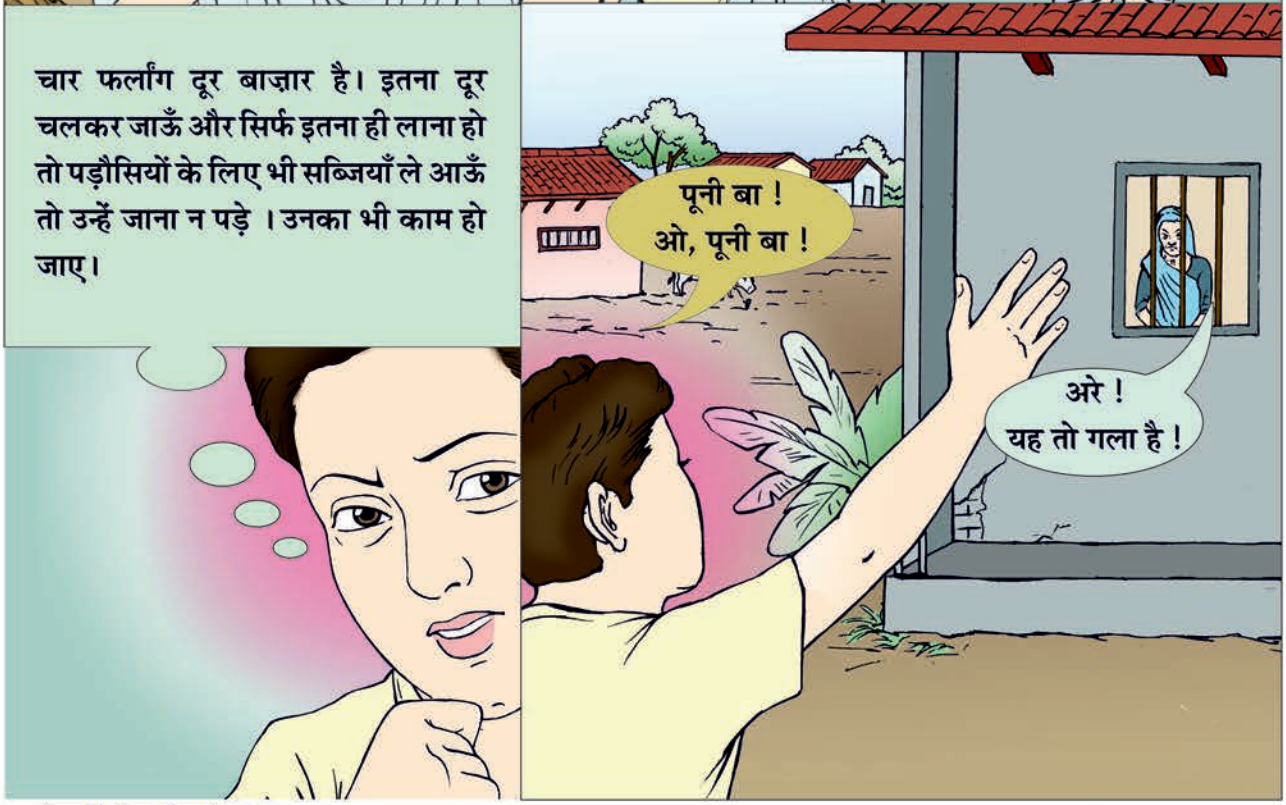

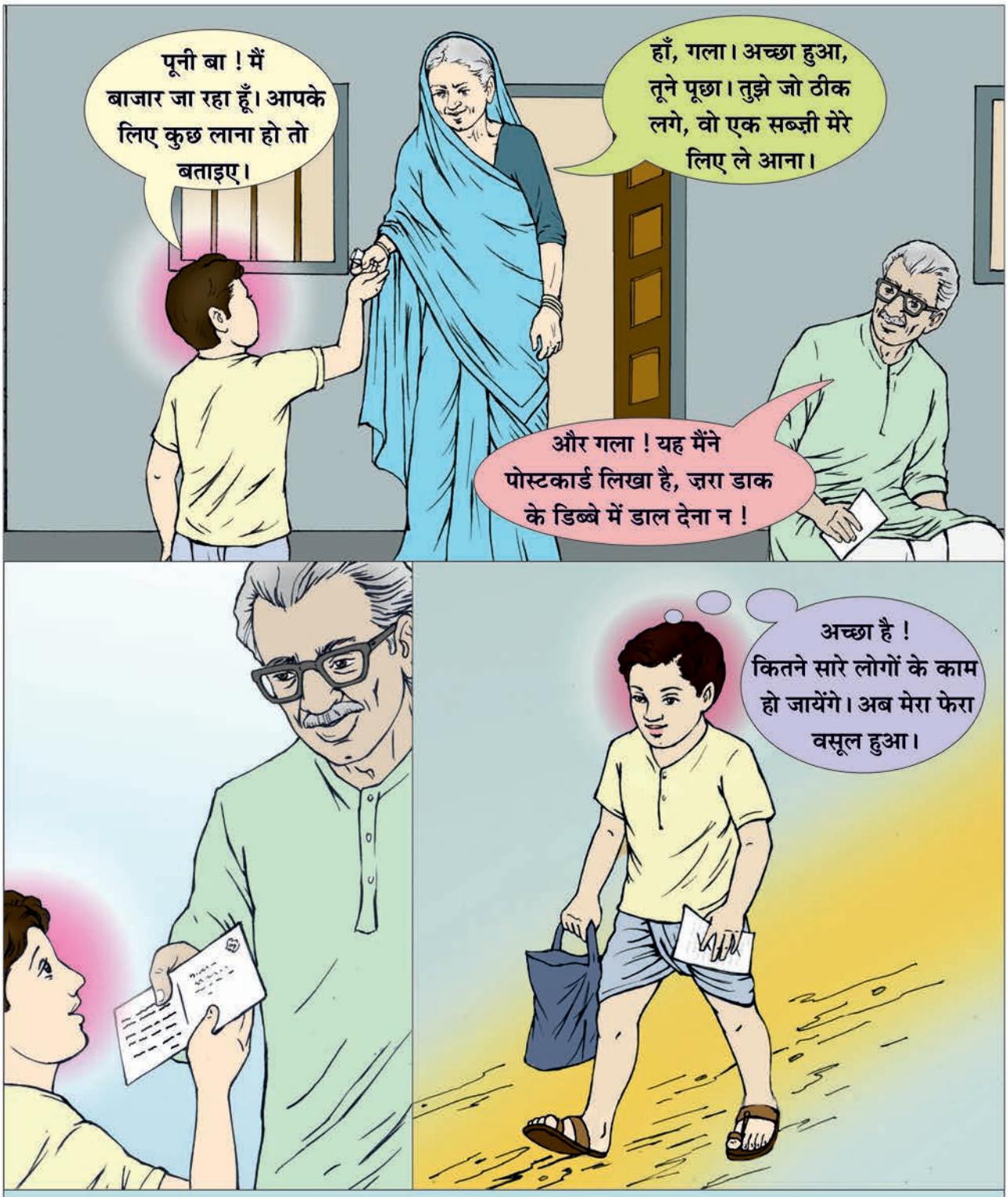

सबके काम कर देने में उन्हें बहुत आनंद आता था। 'जो मुझे मिले, उसे मुझसे कुछ तो सुख मिलना ही चाहिए, नहीं तो मेरा उससे मिलना किस काम का?' शुरू से ही उनके ऐसे विचार थे। बचपन से ही दूसरों को सुख देने की उनकी भावना रहा करती थी।

एक बार उनके घर एक ज्योतिषी आए थे।

अरे देवी ! यह आपका बच्चा बहुत पुण्यवान है! खूब नाम कमायेगा। लेकिन उसके लिए विधि करवानी पड़ेगी।

हाँ, महाराज ! मेरे बेटे के लिए मैं विधि करवाऊँगी। क्या खर्चा आयेगा?

ज़्यादा कुछ नहीं। यही कुछ सौ-डेढ़ सौ रुपये लगेंगे।

उस समय के सौ रुपये यानी अब के १००० रुपये जितने। अंबालाल तो पिछले जन्मों का डेवेलपमेन्ट लेकर आये थे। इसलिए छोटे थे, तभी से उनमें गज़ब की सूझ थी।

विधि करने से तुम्हारा कल्याण होगा, बच्चे।

ना,माँ ! हमें कोई विधि नहीं करवानी।

मैं तो भगवान की चिठ्ठी लेकर आया हूँ। मेरे कल्याण के लिए आपकी विधि की ज़रूरत नहीं है।

मैं अपना भाग्य ले कर आया हूँ, उसे कोई व्यक्ति या वस्तु बदल नहीं सकती, ऐसी गहरी समझ उन्हें थी।

अंबालाल बचपन में खूब ही नटखट थे। घर के पीछे की दीवार कूदकर, तालाब पर चले जात थे। तालाब में नहाती भैंस पर बैठ कर उन्हें लगता जैसे हाथी पर बैठे हों।

बचपन में उनका शरीर बहुत हृष्टपुष्ट था। खेल ही खेल में गाँव का तालाब तैर कर पार कर लेते थे।

अंबालाल मित्रों के साथ कई बार खड़िया पेन्सिल का खेल खेलते। एक डिब्बी में पेन्सिल के टुकड़े दूर से डालने होते थे। सभी मित्र निशाना लगा कर डालते, फिर भी, सात में से तीन-चार बार ही डिब्बी में निशाना लगता, बाकी के उछल कर बाहर गिर जाते।

अंबालाल तो वैसे ही, बिना निशाना लगाये डालते, फिर भी पाँचेक टुकड़े डिब्बी में आ जाते थे।

इसी प्रकार, असल में इस विश्व में सभी कुछ करनेवाला कोई और ही है, ऐसा उन्हें समझ में आया।

एक बार बालक अंबालाल ने पिता से जेब खर्ची के लिए चार आने माँगे। पर पिताजी ने उन्हें देने से मना कर दिया।

परन्तु बचपन से ही उन्हें लाचारी स्वीकार नहीं थी। खुद की समस्याएँ खुद ही सुलझाना उन्हें अच्छा लगता था।

स्वतंत्रता की ऐसी खुमारी बचपन से ही उनके व्यवहार में नज़र आती थी।

अंबालाल मूलतः मज़ाकिया स्वभाव के थे, परंतु साथ-साथ निरीक्षण करने में भी माहिर। एक बार उनके घर में एक बिल्ली रसोई में घुस आई। अंबालाल ने दही की मटकी ज़मीन पर खुली रख दी और छुप कर तमाशा देखने लगे। दही खराब होगा, उसकी उन्हें परवाह ही नहीं थी।

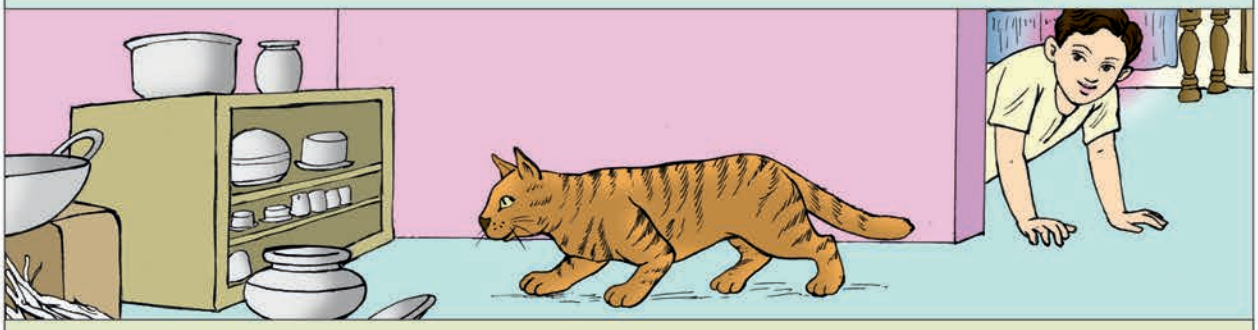

दही की सुगंध आई तो बिल्ली ने खाने के लिए मटकी में मुँह डाला, तले तक पहुँचने के लिए ज़ोर लगाया तो उसका सिर मटकी में फँस गया। फिर तो वापिस निकालना नहीं आया, इसलिए मुँह पर मटकी ले कर घूमती रही।

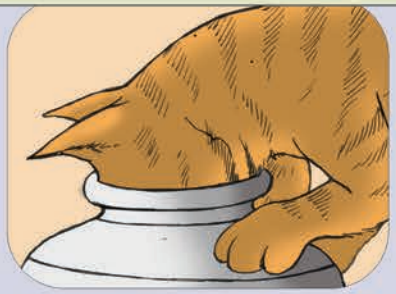

अंबालाल के बड़े भाई का नाम मणिभाई था। वे उनसे उम्र में काफी बड़े थे। अंबालाल तो छोटे थे, तभी मणिभाई का विवाह हो गया था। घर में भाभी आईं, वे भी छोटी बच्ची जितनी ही थीं। परंतु अंबालाल घर में अपना रौब रखना चाहते थे। एक सुबह दूध पीते समय उनसे रहा नहीं गया और उन्होंने ज़िद पकड़ ली।

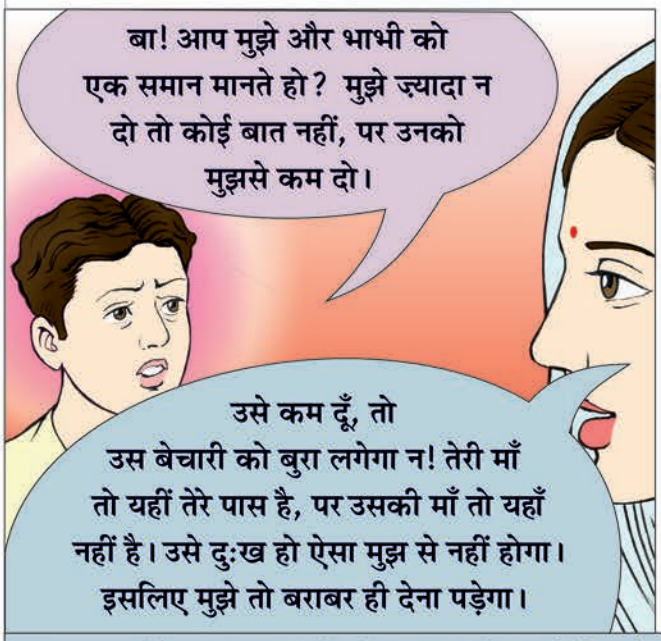

अंबालाल तो रूठ कर दूध पीए बिना अंदर के कमरे में चले गए। झवेर बा उन्हें मनाने नहीं गईं। अतः थोड़ी ही देर में अंबालाल को बेचैनी होने लगी।

अंबालाल ने सार निकाल दिया कि रूठने से उन्हें कितना फायदा हुआ और कितना नुकसान हुआ ! सारे दिन कमरे में अकेले बैठे रहने से खुद का दूध तो खोया ही, पर साथ-साथ सब के साथ हँसना-बोलना, खेलना, पाठशाला जाना सब कुछ खोया न! अंबालाल को अपनी भूल समझ आई। 'यह रूठना तो बहुत नुकसानदेह है।' उसके बाद वे जीवन में कभी रूठे नहीं।

बहू और बेटे को एक समान मानने की कितनी अनोखी समझ रही होगी झवेरबा में! झवेरबा जैसी भद्र और संस्कारी स्त्री तो मिलनी मुश्किल हैं। उनका प्रताप इतना था कि घर में से बाहर जाएँ तो मुहल्ले में आसपास के हर एक घर में से सभी बा को 'जय श्री कृष्ण' कहने बाहर आ जाते। उनके लिए सब को बहुत ही पूज्य भाव था। उनका चेहरा देखते ही कोई दुःखी, सुखी हो जाता, ऐसा उनका प्रभाव था। हर कोई उन्हें 'देवी' कह कर सम्मान देता।

यह देखकर अंबालाल के मन में होता कि बा के प्रति सबका आदरभाव उनके उत्कृष्ट गुणों के कारण है। मुझे भी जीवन में उनके जैसा संस्कारी बनना है।

सात वर्ष के हुए, तब से अंबालाल ने शाला में पढ़ने जाना शुरू किया। शाला के पहले चार वर्ष गुजराती स्कूल में और बाद के सात वर्ष अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़े।

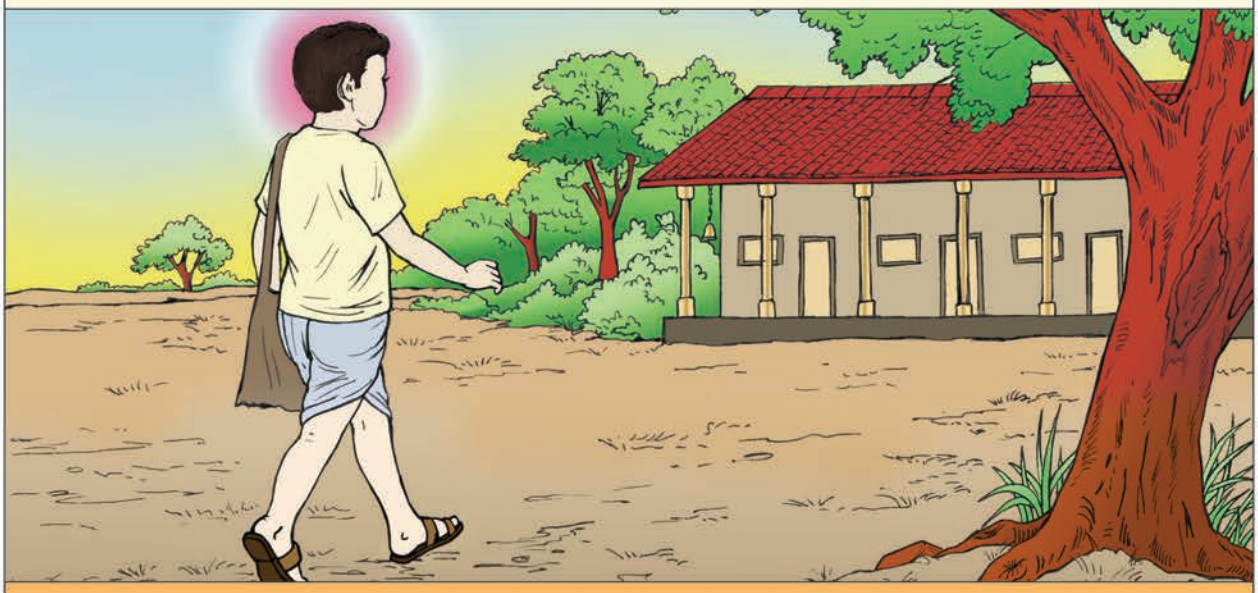

पढ़ने में बहुत ही होशियार, शिक्षक के एक बार समझाने से ही उन्हें सब समझ आ जाता और याद रह जाता था। जितने चतुर उतने ही वे नटखट भी थे, इसलिए शिक्षक उनसे घबराते थे।

बड़े हो कर अंबालाल कहते, ''बचपन से ही रौब मारने के मेरे स्वभाव के पीछे जो अहंकार और टेढ़ापन था, उसे पहचान कर खत्म करने के बाद ही मेरा अंत:करण सच्चे अर्थ में निर्मल हुआ।''

बालक अंबालाल कई बार मित्रों के साथ खेतों में जाते थे और आम, अमरूद वगैरह तोड़ कर खाते।

सब मित्र तो खाने के बाद फल कपड़े में बाँध कर अपने साथ घर पर ले जाते थे, परंतु अंबालाल कभी भी फल घर पर नहीं ले जाते थे। बचपन से ही उन में लोभ बिलकुल नहीं था।

अंबालाल जब नौ वर्ष के थे, तब एक बार उनकी दादी माँ आफ्रीका जाने वाली थीं।

यह कह कर अंबालाल ने तो ऐसा नाटक किया कि सभी को उन्हें आफ्रीका भेजने का विचार छोड़ देना पड़ा। उनके हृदय में भारत भूमि का महत्व निःशंक और स्पष्ट रूप से था।

अंबालाल दस वर्ष के थे तब एक रात आंगन में उनके पिताजी मूलजी भाई गहरी नींद सोए हुए थे। झवेर बा और अंबालाल भी सोने की तैयारी कर रहे थे, तभी अचानक.....

झवेर बा की दृष्टि मूलजीभाई पर पड़ी। एक पाँच फूट लंबा साँप फन फैला कर उनके बिस्तर पर बैठा था। झवेर बा बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए और धीरज रखा। थोड़े समय बाद साँप उनके शरीर पर से रेंगते हुए चला गया।

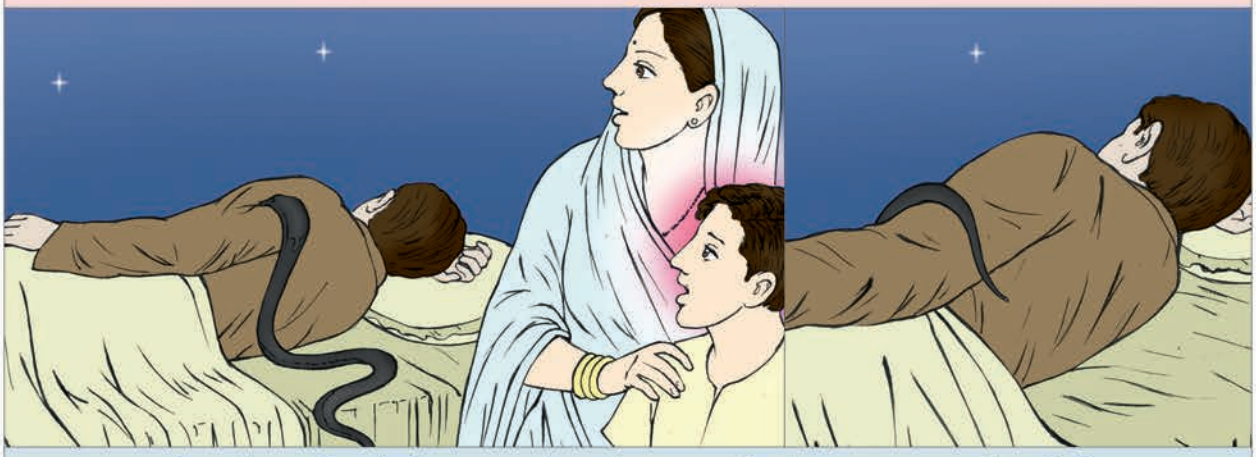

झवेरबा ने मूलजीभाई को जगाया और सारी बात बताई। अंबालाल यह सब देख रहे थे।

बेटा, यदि मैं चिल्लाती तो तेरे पिताजी जाग जाते। साँप यह देखकर भयभीत हो जाता और घबराकर उन्हें काट लेता।

अंबालाल को झवेर बा के धीरज और समता पर नाज़ हुआ। इस प्रकार उन्हें बचपन में ही, जीवन में आने वाली मुश्किलों में किस तरह समता रखनी, उसका बोध-पाठ मिला।

अंबालाल ग्यारह वर्ष के थे तब उनके एक चचेरे भाई गुज़र गए। मरनेवाले के दो भाई 'ओ मेरे भाई रे' ऐसे चिल्ला कर इतनी ज़ोर से रोये कि सुनकर अंबालाल का हृदय भर आया और आँखों में से अश्रुधारा बहने लगी। सभी स्त्रियाँ भी मुँह पर साड़ी ढँक कर रोती जाती थीं और छाती कूटती जाती थीं। अंबालाल तो बहुत भावुक हो गए।

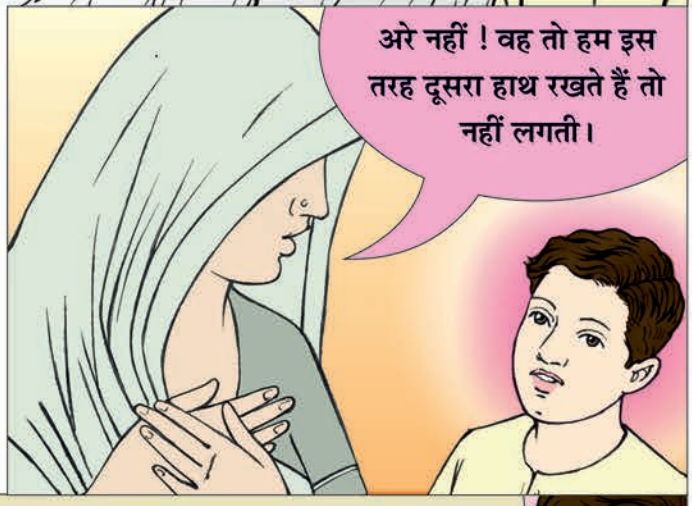

अरे ! मैंने तो जो देखा उसी को सच माना ! ये तो बस दिखावा कर रहे हैं ! अंदर तो कुछ दुःख नहीं है, इन लोगों को ! यह दुनिया तो सच में अंधेर ही है ! इसीलिए इसे 'लौकिक' कहते होंगे न! इस दुनिया के सब मार्ग 'लौकिक' हैं। लौकिक में फँसे तो मारे जाएँगे। लोगों को देख-देख कर सीखने जैसा नहीं है। मुझे तो 'अलौकिक' मार्ग पर चलना है।

अंबालाल ने तो बचपन से ही लोकसंज्ञा को महत्व नहीं दिया था। लोगों को जिन संसारी वस्तुओं में सुख लगता है, उसमें उन्हें सुख नहीं लगता था।

अंबालाल सातवीं कक्षा में पढ़ते थे, तब एक बार स्कूल में शिक्षक जब गणित का विषय पढ़ा रहे थे.....

गज़ब थी अंबालाल की अंतर दृष्टि। इस तरह इतनी उम्र में हर एक जीव मात्र में भगवान बिराजे हुए हैं, ऐसा उन्होंने ढूँढ निकाला।

अंबालाल बारह वर्ष के थे, तब बचपन में उनके गले में गुरु से बंधवाई गई कंठी टूट गई !

'न गुरु'– गुरु बिना का– ऐसे शब्द का अपभ्रंश करके लोग 'नुगरा' शब्द बोलते थे। ऐसा फिर उन्हें बड़ी उम्र में समझ में आया। परन्तु सत्य के मार्ग को खोजने वाले उत्साही अंबालाल को लोकसंज्ञाँ का डर नहीं था।

अंबालाल के स्कूल के पास ही एक संतपुरुष का आश्रम था। स्कूल से लौटते समय अंबालाल उस आश्रम में संत के दर्शन और सेवा करने जाते थे। वहाँ संतपुरुष के पास बैठकर उनके पैर दबा देते थे। संत उन पर प्रसन्न थे। एक दिन संत ने अंबालाल से कहा....

तेरह वर्ष की छोटी उम्र में अंबालाल में ऐसी स्वतंत्रता जागी। कोई ऊपरी नहीं चाहिए, न ही कोई अन्डरहेन्ड चाहिए। भगवान भी ऊपरी (बॉस) नहीं, 'ऐसा मोक्ष चाहिए'। 'मुक्ति' का ऐसा स्वरूप उन्होंने सोचा था। तब उन्हें पता नहीं था कि वीतरागों का मोक्ष ऐसा ही होता है। अपनी खुद की भूलें ही अपने सिर पर चढ़ कर, अपनी 'ऊपरी' (बॉस) बन जाती हैं। वे भूलें चदि हम खत्म कर सकें, तो फिर हमारा कोई ऊपरी है ही नहीं। ज्ञानी पुरुष के रूप में मोक्ष की ऐसी सुंदर समझ उन्होंने विश्व के समक्ष रखी है।

बचपन से ही अंबालाल के विचार और व्यवहार दूसरों से कुछ भिन्न ही थे। लोग तो अपने ऊपरी (वरिष्ठ) को खुश रखते हैं और मातहत पर दादागिरी करते हैं और रौब जमाते हैं। परंतु अंबालाल तो ऊपरी की दादागिरी को ललकारते थे और मातहत का ज़ोरदार रक्षण करते थे। रास्ते पर भी कोई लड़ते हों तो उनमें जो हारा हो, जिसने मार खाई हो, उसका पक्ष लेते और रक्षण करते। उनमें गज़ब के क्षत्रिय गुण विकसित थे।

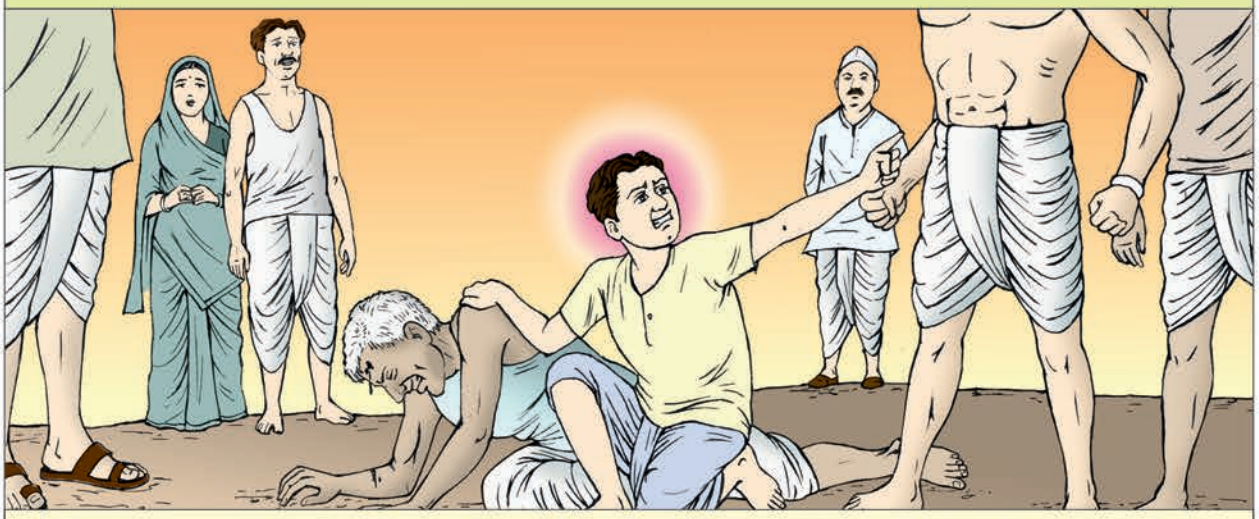

वे तो स्पष्ट कहते थे कि जब तक हम में अन्डरहेन्ड यानी किसी को अपने कब्ज़े में रखने की इच्छा है, तब तक हमें अन्डरहेन्ड बनाने वाले ऊपरी (बॉस) भी मिलते ही रहते हैं।

तेरहवें वर्ष में अंबालाल को 'असामान्य' बनने का विचार आया था।

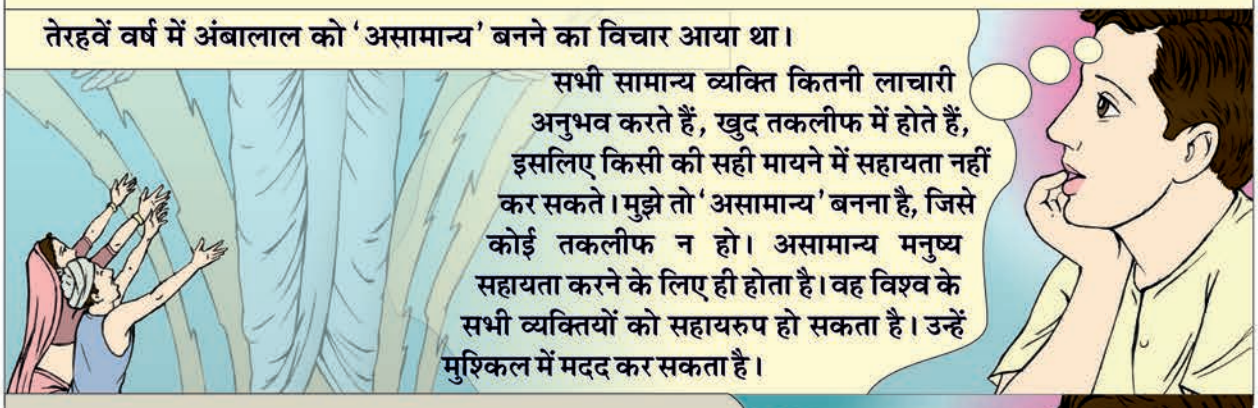

'स्वतंत्रता के उपासक' अंबालाल को नौकरी करना पसंद नहीं था। व्यापार में कम पैसे मिलेंगे तो कम में काम चला लेंगे, पर मुझे ऊपरी की परवशता नहीं चाहिए ऐसा कहते थे। इसी लिए शाला की पढ़ाई के बाद वे बड़े भैया के साथ व्यापार में लग गए।

एक बार उनका नौकर १२-१५ दिनों के लिए बाहर गया था। तब उनके बड़े भैया ने कहा 'सब अपने-अपने बिस्तर खुद बिछाना और समेटना।' तब अंबालाल को भी गद्दा खुद ही उठाना पड़ा।

यह गद्दा रोज़ उठाना? कितना भारी है! उसे उठाऊँ तो लगता है मानो गद्दा ही मेरे ऊपर सो रहा हो! तो मैं गद्दे पर सो जाता हूँ या गद्दा मुझ पर सोता है? ऐसे गद्दे पर सोने का क्या अर्थ है?

यह सीख मिलने के बाद अंबालाल ने रात को गद्दे पर सोना छोड़ दिया। फिर हमेशा सादी दरी पर ही सोते थे।

उन्होंने बचपन में आतिशबाज़ी और पटाखे भी कभी नहीं फोड़े। मित्र पतंग उड़ा रहे हों तो उनके पास बैठे रहते। पर उन्हें खुद उड़ाने का मन नहीं करता था। बचपन से ही उन्हें चीज़ें खरीदने और काम में लेने का शौक नहीं था।

अंबालाल तेरह वर्ष के थे, तब उनके पड़ौस के एक वृद्ध चाचा बहुत बीमार हो गए। आसपास के घरों से सभी बारी-बारी से उनकी सेवा करने जाते थे और उनके पास रात को सोते थे। एक रविवार को अंबालाल ने रात को सेवा के लिए उनके घर पर सोने की ज़िम्मेदारी ली। साढ़े दस बजे अंबालाल ने वृद्ध चाचाजी को दवाई पिलाई और सुला दिया। तब लगभग ११ बजे मुहल्ले में एक कुत्ता रोने लगा। अंबालाल आवाज़ से जग गये।

अरे बाप रे! आज ही क्यों यह कुत्ता रोने लगा। कुत्ता रोया तो निश्चित ही अब यमराज आयेंगे और बूढ़े चाचाजी को ले जाएँगे।

अंबालाल ने ऐसी बात अपने रिश्तेदारों से सुनी थी। तो उन्हें श्रद्धा बैठ गई कि कोई बीमार हो और रात को कुत्ता रोये उसका मतलब यमराज उसे लेने आ रहे हैं। इसलिए कुत्ते की आवाज़ सुन कर वे डर गए। 'यमराज' का वर्णन सुना था इसलिए डर बैठ गया था।

'यमराज अभी आएँगे' इस डर से अंबालाल को बिल्कुल नींद नहीं आई, पर यमराज भी नहीं आए। वे चाचाजी तो आराम से सोते रहे। अंत में सुबह होते-होते अंबालाल की भी आँख लग गई। अचानक आँख खुली तो देखा चाचा तो तब भी आराम से सो रहे थे। सुबह दूसरे पड़ौसी सेवा के लिए आए।

इस पर से अंबालाल ने खोज निकाला की 'यमराज' नहीं पर असल में 'नियमराज' है। लोगों ने नियमराज में से यमराज शब्द बना दिया है।

अंधविश्वास, गलत मान्यताओं और अज्ञान को 'सही समझ' से खत्म करने की शुरूआत उन्होंने इस तरह की।

अंबालाल जब १७-१८ वर्ष के थे, तब एक बार अपने मित्र के साथ सर्कस देखने गये थे। तब चार-चार आने की दो टिकट ली थीं। जब ईनाम की घोषणा हुई तो उनका पहला नंबर लगा। ईनाम में उन्हें साढ़े इक्कीस रुपये की जापानी साईकिल मिली।

एक क्षण भी विचार किए बिना खुद की वस्तु कौन दे देने को तैयार होता है? उनके जैसा खानदानी तो ढूँढने पर भी न मिले।

एक बार परीक्षा देने के लिए शहर जाना हुआ। तब सभी मित्रों ने तय किया कि तीन तांगे कर के नाटक देखने जायें। तब नाटक की टिकट एक रुपये की थी।

वहाँ पहुँच कर सभी, दूसरा कोई टिकट ले ले ऐसी राह देखते खड़े रहे। अंबालाल के पास जेब में पंद्रह रुपये थे।

'कौन पैसे निकालता है?' ऐसा सोच कर क्या राह देखते खड़े रहें ? पैसा प्यारा या इज़्ज़त प्यारी? पैसे बचाने के विचार आयें, उसे खानदानी नहीं कहते।

सभी की टिकट अंबालाल ने खरीदी। पर फिर विचार आया कि बड़े भैया को पंद्रह रुपये का हिसाब देना पड़ेगा। नाटक की बात छुपाने के लिए सच-झूठ बोलना पड़ेगा। क्या करूँगा? यह सौदा भारी पड़ा। अपना मान रखने के लिए यह किया। पर फिर निश्चय किया किया कि अब नाटक देखना बंद।

अंबालाल की खासियत थी कि एक बार भूल पता चले तो वह भूल फिर कभी नहीं होती थी।

अरे अंबालाल, रेडियो चला न ! हम गीत सुनते हैं।

ना भई ! रेडियो सुनने के लिए क्यों मेरा क़ीमती समय बरबाद करूँ ?

यह तो पागलपन है ! ये इंसान बोलते हैं, वही सुनने से ऊब जाते हैं न ! उनकी बातें और कहानियाँ भी रेडियो ही हैं न !

एक बार अंबालाल एक मित्र के पास से घड़ी खरीद कर ले आए। पर फिर घड़ी में टाईम देखें तब 'अरे, देर हो गई ! अब क्या होगा?' ऐसा उन्हें बार-बार हुआ करता।

फिर एक रात घड़ी पहन कर हाथ सिर के नीचे रखकर सो गए, तो घड़ी कान के पास टिक-टिक बजती रहती। इसलिए दूसरे दिन निश्चय कर लिया कि यह मुझे नहीं चाहिए। जो वस्तु इस प्रकार दुःख देती हो, उसका बंधन किस काम का !

कई बार अंबालाल साईकिल पर घूमने निकल जाते। बावन रुपये की 'रेले' कंपनी की साईकिल उनके लिए ली थी।

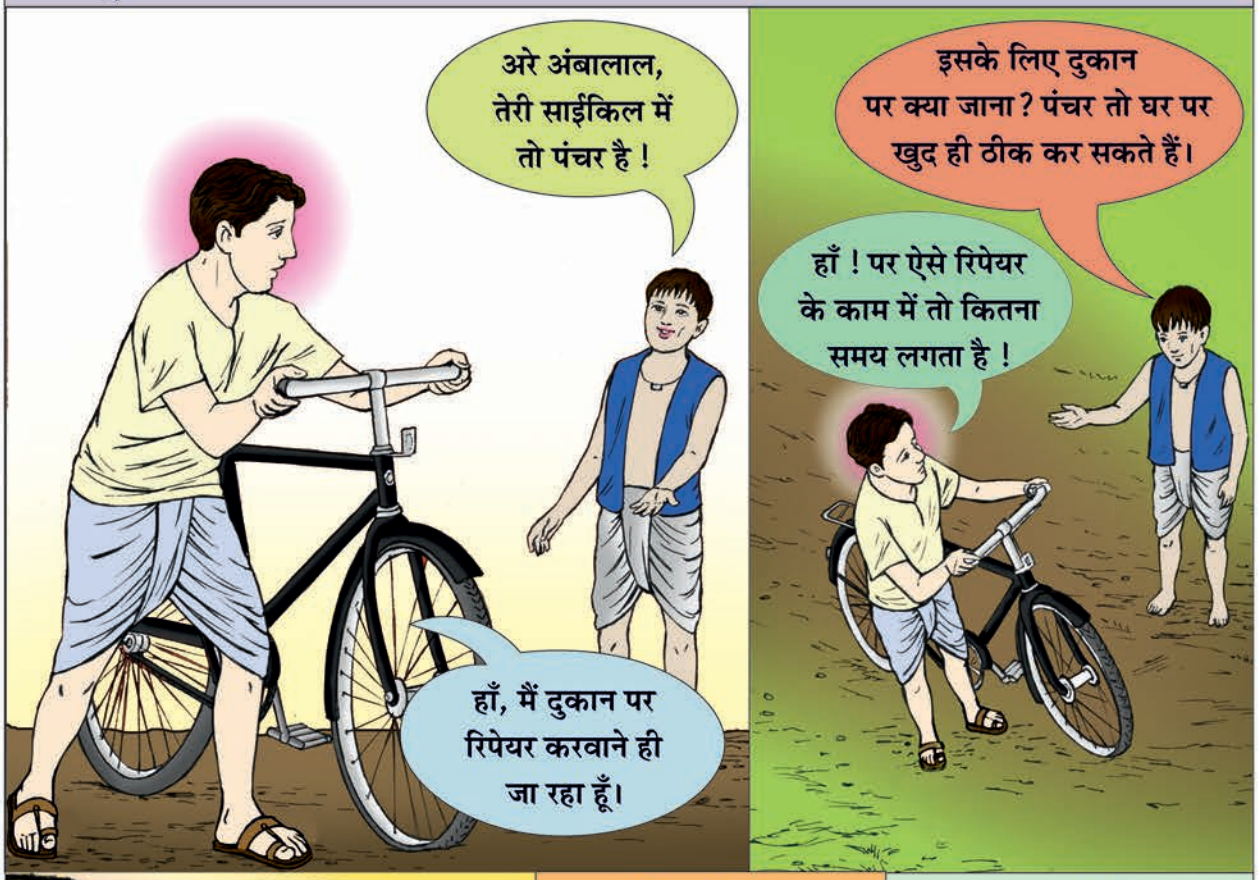

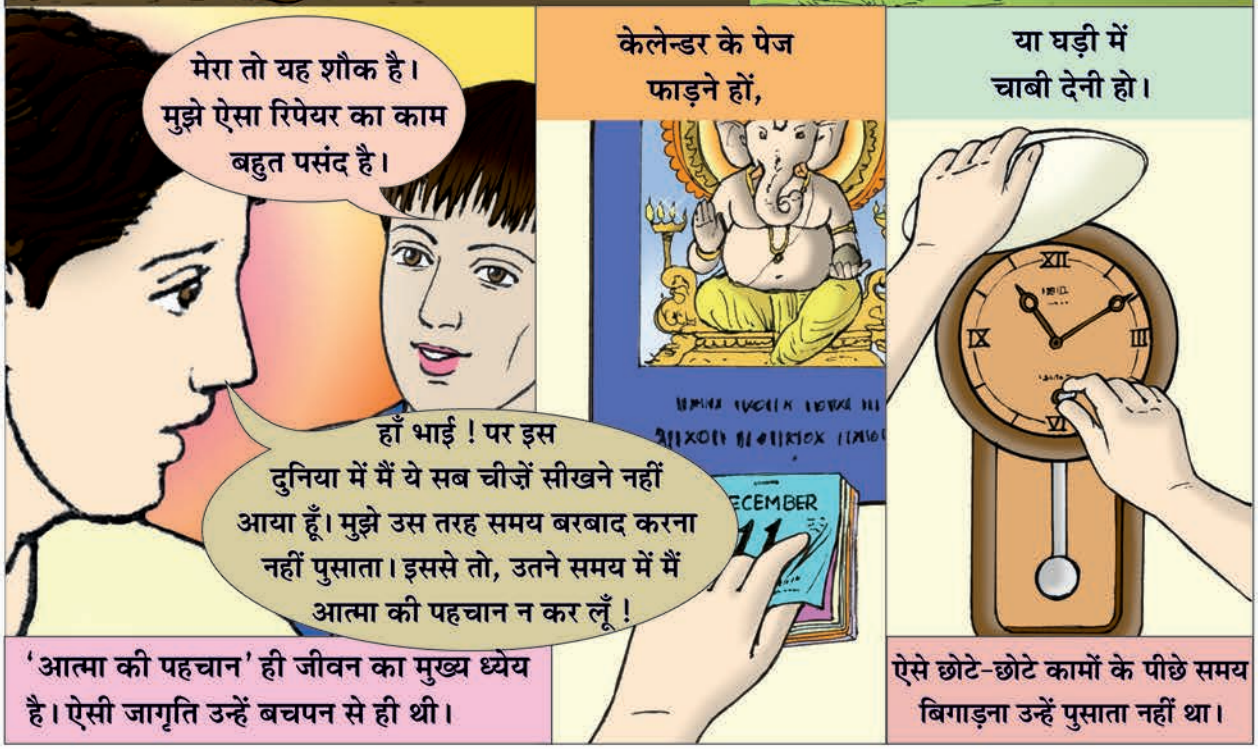

'आत्मा की पहचान' ही जीवन का मुख्य ध्येय है। ऐसी जागृति उन्हें बचपन से ही थी।

ऐसे छोटे-छोटे कामों के पीछे समय बिगाड़ना उन्हें पुसाता नहीं था।

अंबालाल ने अपने लिए भद्र, सुन्दर पर कम पढ़ी लिखी, उन्हें दबाये नहीं, उनके कहे अनुसार चले ऐसी पत्नी की कल्पना की थी। जैसी उन्होंने कल्पना की थी वैसी ही पत्नी उन्हें हीराबा के रूप में मिलीं।

उस ज़माने में बहुत छोटी उम्र में शादी करवा देते थे। विवाह से पहले उन्होंने हीराबा को सिर्फ एक बार ही देखा था। उस समय के रीति-रिवाजों के अनुसार धूमधाम से उनका विवाह हुआ। चार घोड़ोंवाली बग्घी में बैठ कर वे शादी के लिए गए। क्षत्रिय कुल के थे, इसलिए दूल्हे को माथे पर साफा बांधा था।

उनकी सास को अंबालाल खूब पसंद आ गए। हर्ष ही हर्ष में उन्हें उठा कर गोदी में ले लिया था।

दूल्हे राजा मंडप में बैठे, थोड़ी देर में कन्या हीराबा को उनके मामा मंडप में ले आए। अंबालाल के सिर पर बड़ा फूलों का सेहरा था। सेहरे के भार से साफा एक ओर खिसक गया और आँख पर आ गया। इस कारण से उन्हें हीराबा ठीक से दिखे नहीं। फिर उन्होंने धीरे से साफा ऊँचा किया और फूल हटा कर हीराबा की तरफ देखा।

दिखतीं तो सुंदर हैं! पर अभी शादी करने बैठे हैं, यह मंडापा (स्थापन) तो हुआ पर अंत में दोनों में से एक को रंडापा (विधवा अथवा विधुर होना) तो आयेगा न !

इतनी छोटी उम्र में, जब खुद के विवाह का मोह और नशा चढ़ा हो, तब वैधव्य का ऐसा विचार तो किसी विरले को ही आये न ! तब से ही कितनी वैराग्य और मोह रहित दृष्टि थी !

इस प्रकार गृहस्थ जीवन की दहलीज पर पैर रखते हुए अंबालाल का बचपन कितना सुंदर उभर कर आता है। भगवान की सही पहचान कर के उन्हें प्राप्त करने की जिज्ञासा, हर कदम पर उनके विचारों और व्यवहार में दृष्टिगोचर होती है।

ईश्वर की प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक समझ 'अक्रम विज्ञान' द्वारा विश्व के सन्मुख रखने वाले ज्ञानी पुरुष अंबालाल मूलजीभाई पटेल ने किस प्रकार अपना विवाहित जीवन बिताया होगा और साथ ही भगवान की खोज को आगे बढ़ाया होगा, वह जानने के लिए उनके जीवन की घटनाओं का वर्णन आप अगले भाग में पढ़ना चाहेंगे न?

इसके बाद की पुस्तिका 'दादा भगवान' भाग-२ में आप देखेंगे....

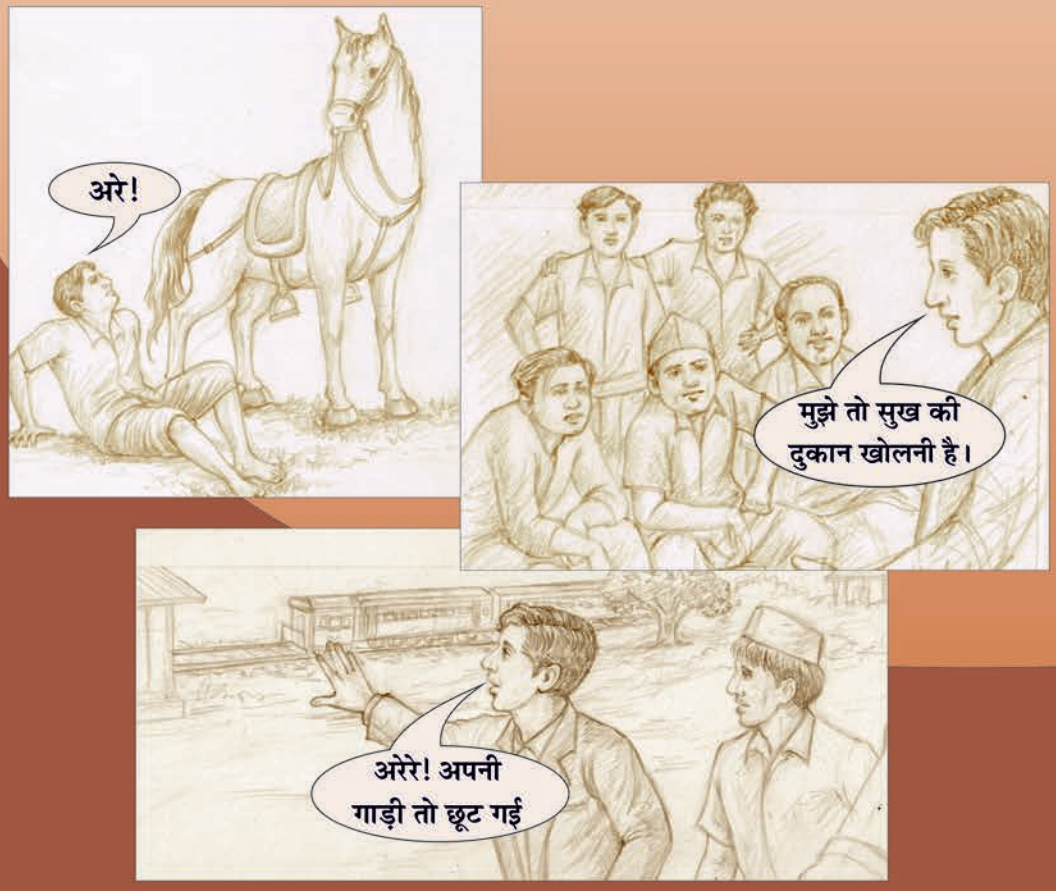

★ जय सच्चिदानंद ★

बालविज्ञान की अन्य प्रस्तुतियाँ

Games
Stories
Articles
Videos
Kids' songs
Drawing by kids
Latest Updates
And much much more...

Visit kids.dadabhagwan.org

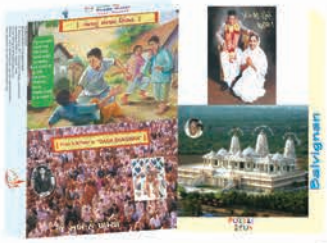

पझल फन

स्टोरी बुक

मन्थली मेगेझीन

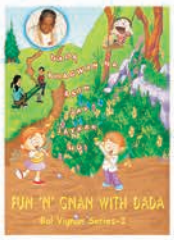

एक्टिविटी बुक

पिक्चर बुक

दादा भगवान वर्तमान युग के अद्वितीय आत्मज्ञानी पुरुष थे। बचपन से ही लौकिक मान्यताओं और अंधविश्वासों में बह जाने के बदले 'सही समझ' प्राप्त करने की खोजक वृत्ति उनमें थी। उनके दैनिक जीवन की कितनी ही साधारण घटनाओं में भी उनका असामान्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण देखने को मिलता है।

Printed By : Mahavideh foundation (079) 27542964.

ISBN 978-81-89933-43-2

ALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada